पितृपक्ष

स्वामी शान्तानन्द द्वारा लिखित

पितृपक्ष को "पितरों का पखवाड़ा" भी कहा जाता है, इसका पालन पन्द्रह दिनों की समयावधि में किया जाता है जो भारतीय पंचांग के अनुसार भाद्रपद माह में और ग्रैगोरियन कैलेन्डर के अनुसार सितम्बर-अक्टूबर माह में पड़ता है।

संस्कृत भाषा में 'पितृ' का अर्थ है पितर यानी पूर्वज और 'पक्ष' का अर्थ है चन्द्रतिथि के अनुसार पन्द्रह दिनों का एक पखवाड़ा। वैदिक पंचांग के अनुसार एक पक्ष में पन्द्रह तिथियाँ होती हैं। एक माह में दो पक्ष होते हैं, एक पूर्णिमा से पहले और एक बाद में। अमावस्या के बाद आने वाला पक्ष शुक्ल पक्ष कहलाता है; हर दिन चन्द्रमा की बढ़ती कला और दीप्ति के साथ पूर्णिमा के दिन इसका समापन होता है। पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष आरम्भ होता है जिसमें चन्द्रमा की कलाएँ प्रतिदिन घटती जाती हैं और अमावस्या के दिन चन्द्रमा का प्रकाश पूर्णरूप से लुप्त हो जाता है। शुक्ल पक्ष का सम्बन्ध है, विकास और विस्तार से और कृष्ण पक्ष का सम्बन्ध आत्मनिरीक्षण, चिन्तन-मनन, शुद्धिकरण और रूपान्तरण से है।

पितृपक्ष का आरम्भ, श्रीगणेशोत्सव के समापन की पूर्णिमा के बाद वाली प्रतिपदा यानी प्रथम दिन से होता। इसका अर्थ यह है कि पितृपक्ष कृष्णपक्ष के दौरान आता है और इसका समापन 'सर्वपितृ अमावस्या' पर होता है। अधिकांश वर्षों में शारदीय विषुव इसी समय होता है, जब सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध से दक्षिणी गोलार्द्ध की ओर संक्रमण करता है। वैदिक परम्परा के शास्त्रों के अनुसार दक्षिण दिशा पूर्वजों से सम्बन्धित है। अतः, पितृपक्ष प्रकृति की गतिविधियाँ और इस काल के दौरान होने वाली नक्षत्रों की अनेक गतिविधियों के पारम्परिक महत्त्व, दोनों ही के साथ एकलय है।

पितृपक्ष का पालन करने का उद्गम, भारत की प्राचीन वैदिक परम्परा में है। गरुडपुराण तथा विष्णुपुराण जैसे शास्त्रों में वर्णन किया गया है कि पितृपक्ष एक शक्तिपूरित समय है जब उन सबका सम्मान किया जाता है व उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है जो हमसे पहले इस धरा पर आए और हमारे लिए अपने प्रज्ञान, संरक्षण, प्रेम या भौतिक सम्पदा की विरासत छोड़ गए हैं। वैदिक परम्परानुसार 'पितर' से विशिष्ट रूप में तात्पर्य हमारे माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, परदादा-परदादी, परनाना-परनानी से है। व्यवहार में, लोग पितृपक्ष के दौरान अपने दिवंगत जीवनसाथी, सन्तानों, भाई-बहनों, चाचा-चाची, सास-ससुर और साथ ही मित्रों, पड़ोसियों, शिक्षकों, मार्गदर्शकों और प्रिय पालतू जानवरों का भी सम्मान करते है।

पूर्वजों, मित्रों, मार्गदर्शकों व संरक्षकों के द्वारा आप पर पड़े प्रभाव पर मनन करने पर आप समझेंगे कि आदर्श होने के रूप में और सीखने के स्रोत के रूप में उनका महत्त्व कितना गहन है। आप जो हैं और जो बने हैं इसे जानने में वे आपके पथप्रकाशक रहे तथा प्रभावी रूप से सहायक बने। उन्होंने आपके लिए मार्ग निर्धारित किया ताकि आप अपने जीवन में उसका अनुसरण कर सकें।

सिद्धयोग की सिखावनियाँ यह ज्ञान प्रदान करती हैं कि हमें जिनसे प्रेम है, उनसे हमारा सम्बन्ध—और वास्तव में सृष्टि की हर वस्तु से हमारा सम्बन्ध—इस भूलोक से परे रहता है। इस धरती पर शरीर के निष्प्राण हो जाने पर भी शाश्वत आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। उसी प्रकार, धरा से विदा हो चुके हमारे प्रियजनों के प्रेम की छाप भी शाश्वत है। सिद्धयोग पथ पर, पितृपक्ष के दौरान हम शाश्वत आत्मा का और हमारे प्रियजनों के चिरस्थायी योगदान का सम्मान व गुणगान करते हैं।

पितृपक्ष के दौरान की जाने वाली विधियाँ

भारतीय शास्त्र कहते हैं कि जो जीवित हैं, उन सभी का यह धर्म है कि वे दिवंगत आत्माओं के कल्याण हेतु अपनी प्रार्थनाएँ, आशीर्वाद तथा अपने आध्यात्मिक अभ्यासों के फलों को अर्पित करें। इस प्रकार हम उनका सम्मान करते हैं जिनकी आत्मा इस लोक से प्रयाण कर चुकी है, और हम उनकी आगे की यात्रा के लिए उन्हें सम्बल प्रदान करते हैं।

सिद्धयोगी होने के नाते, पितृपक्ष के दौरान हम अपने पितरों को प्रार्थनाएँ, ध्यान, दक्षिणा, संकीर्तन, मन्त्रजप जैसे आध्यात्मिक अभ्यास व श्रीगुरुगीता पाठ जैसे स्वाध्याय अर्पित कर सकते हैं। साथ ही, उपनिषदों व श्रीभगवद्गीता में सुन्दर श्लोक हैं जिनका पाठ कर हम उस शाश्वत आत्मा का, अपने प्रियजनों की आत्मा का सम्मान कर सकते हैं जो कि भौतिक शरीर के परे है।

पितृपक्ष के समय अपने पितरों की ओर से जनकल्याण के कार्य करने की भी प्रथा है। ऐसा हम कर सकते हैं—ज़रूरतमन्द लोगों को भोजन देकर, संन्यासियों का सम्मान करके, ज़रूरतमन्द बच्चों व युवाओं की शिक्षा के निमित्त धन दान देकर तथा हमारे पूर्वजों द्वारा आरम्भ किए गए धर्मार्थ कार्यों को बढ़ाकर व उनके लिए दान करके। कुछ लोग अपने दिवंगत प्रियजनों का सम्मान करने के लिए, उनकी स्मृति में वृक्षारोपण भी करते हैं जो कि जीवन के प्रतीक हैं। अपने पूर्वजों का सम्मान करने का एक और तरीक़ा है, उनके उन सद्गुणों व महान विशेषताओं पर मनन करना जिन्हें हम अपने अन्दर विकसित करना चाहते हैं।

निषिद्ध कार्य

पितृपक्ष में, अपने पितरों व दिवंगत प्रियजनों का सम्मान करने पर लोगों का ध्यान बना रहने में सम्बल मिले इसके लिए पारम्परिक तौर पर यह सलाह दी जाती है कि इस समय किसी भी नई

परियोजना या महत्त्वपूर्ण कार्य का आरम्भ न किया जाए या विवाह समारोह व लम्बी यात्राएँ न की जाएँ। पितृपक्ष के समय वही यात्रा शुभ मानी जाती है जो तीर्थयात्रा हो या किसी आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में की जाए।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।